UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No.337-342

''उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों की महत्ता''

डॉ. संगीता माहेश्वरी
श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय

सारांशः–
इस सदी में मुख्यतः अत्यधिक जनसंख्या–विस्फोट, गरीबी, शिक्षित एवं अशिक्षित बेराजगारी, सामाजिक व नैतिक पतन जैसी आदि अनेक अनियंत्रित समस्याओं से जूझते हुए हमारे राष्ट्र के जनमानस को यह विचार करना जरुरी है कि इन सबका मूल कारण क्या है ? आज के प्रगतिशील युग में विकसित उच्च शिक्षा–प्रणाली के बावजूद भारतीय समाज की, तथा भारत–भूमि पर रहने वाले अधिसंख्य जनसमूह की जो अवनति उसके जीवन–यापन में दिखाई देती है, उसके धर्म के पालन में दिखाई देती है, उसके दैनिक क्रिया–कलापों में दिखाई देती है, उसके राष्ट्र–धर्म के प्रति दिखाई देती है, वह हमारे जीवन–मूल्यों में अभाव की और इशारा करती है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर अधिकारी, इन्जीनियर, डॉक्टर बनाना आसान है परन्तु ''विद्यार्थियों को सृजनात्मकता की और अग्रसर करते हुए दूसरों की सहायता हेतु प्रेरित करने के साथ–साथ राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में सहयोग करने की भावना का विकास करना'' जैसे जीवन मूल्यों से आत्मसात् कराना भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली के लिए एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य है। उच्च शिक्षण प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन करना वर्तमान समय की आवश्यकता है जिससे राष्ट्र अपनी संस्कृति, धर्म तथा अपने इतिहास को अक्षुण्ण बनाये रख सके और ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना को जीवंत कर सके। हमें शिक्षण संस्थानों को राष्ट्र कल्याण के उद्गम स्थल के रुप में परिवर्तित करना होगा।

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा जिसे विश्वविद्यालयीन शिक्षा भी कहा जाता है, महाविद्यालयों एवं अन्य विशिश्ट शिक्षा–संस्थानों आदि में दी जाती है। उच्च शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थियों को विशद साहित्यिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक ज्ञान प्रदान कर ऐसे नागरिकों का निर्माण किया जाता है जिनके द्वारा उस देश की सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं औद्योगिक विकास के स्तर में वृद्धि होती हैं । उच्च शिक्षा के द्वारा ही सम्पूर्ण मानव समाज की आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान खोजा जाता है। किसी भी देश की उन्नति उस देश की उच्च शिक्षा से संबधित होती है। उच्च शिक्षा दोशयुक्त होने से संपूर्ण देश दूशित हो जाता है। वास्तव में उच्च शिक्षा, शिक्षा का वह स्तर है जो देश को प्रत्येक क्षेत्र में नेतृत्व, देश की उच्च शिक्षा विकसित करेगी उसी स्तर तक देश का विकास संभव हो सकेगा।

शिक्षार्थी के जीवन में नैतिक मूल्य परक उच्च शिक्षा लोगों को एक अवसर प्रदान करती है जिससे कि वे मानवता के सामने आज सोचनीय रूप से उपस्थित सामाजिक, आर्थिक, सांसकृतिक, नैतिक और अध्यात्मिक मसला पर विचार कर सकें। अपने विशिश्ट ज्ञान और कौशल के प्रसार द्वारा उच्च शिक्षा राश्ट्रीय विकास में अमूल्य योगदान देती है अतः हमारे अस्तित्व के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No.337-342

आज, शिक्षण संस्थानों की संख्या में भारत दुनियाँ में प्रथम स्थान पर है, और विद्यार्थी नामांकन संख्या म दूसरा। आर्थिक वृद्धि हाल के दशकों में भारत के विकास की एक प्रमुख विशेशता रही है। फिर भी, उच्च शिक्षा की जिस क्षमता एवं गुणवत्ता की भारत के आधुनिकीकरण हेतु जरुरत थी, वह लक्ष्य हम हासिल नहीं कर सके। वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपना मुकाम हासिल करने के लिए यह जरुरी है कि हम वैश्विक वास्तविकताओं के अनुरुप अपनी शिक्षा प्रणाली और पद्धति को उसके अनुकूल बनाएं, ताकि यह निरंतर आवश्यक कौशल और प्रशिक्षित कार्यबल की आपूर्ति बनाए रखे और इसके साथ भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था से मुकाबला कर सके।

शिक्षा एवं जीवन मूल्य–

हमारे समाज में प्रारंभ काल से ही अनेक शिक्षा प्रणाली रही है यथा –पारिवारिक शिक्षा प्रणाली , प्राकृतिक शिक्षा प्रणाली, गुरूकूल शिक्षा प्रणाली, विद्यालयीन शिक्षा प्रणाली इत्यादि ।शिक्षा प्रणाली को जब हम नैतिक मूल्य के साथ जोड़ कर देखते है तो हमारे समक्ष कई बातें विचार के लिए प्रस्तुत होती हैं । आज की शिक्षा प्रणाली में जीवन मूल्यों का ज्ञान प्राथमिक कक्षाओं में नैतिक शिक्षा से दूर होकर कई सुशिक्षित जनों में ही देखने को मिलता है ।

इसी तरह आज चारों ओर अविश्वास का, बेईमानी का वातावरण बना हुआ है। इसके परिणामस्वरुप सकारात्मक के बजाय नकारात्मक सोच निर्मित हो रही है। एसे बिगड़ें हुए माहौल को सवाँरने के लिए शिक्षा का साथ ही कारगर साधन है। मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करने से ही भावी नागरिक तैयार होंगे, उनकी सोच में बदलाव आयेगा।

इसमे कोई शक नहीं है कि इस सदी में मूल्य आधारित शिक्षा की बेहद आवश्यकता हैं, क्योंकि वर्तमान समय मूल्यों की स्थापना का समय नहीं रहा बल्कि यह समय मूल्य विघटन का समय है। दया, माया, प्रेम, पड़ोसी धर्म का निर्वाह, परोपकार, त्याग, मानवता, भाईचारा इन सारे 'ाब्दों को हम मानवीय मूल्य कहते है परन्तु अब इन सभी मूल्यों का विघटन हो रहा है। ऐसे समय में उम्मीद की एक किरण नजर आती है, वह है मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करना। शिक्षाक्रम में ऐसे परिवर्तन की जरुरत है जिससे सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक सशक्त साधन बन सके।

शिक्षा के द्वारा उन सार्वजनिक और 'ाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो हमारे लोगों को एकता की ओर ले जा सके। इन मूल्यों से धार्मिक अंधविश्वास, कटटरता, असहिस्णुता, अकर्मण्यता, हिंसा, नैतिक पतन और भाग्यवाद का अंत करने में निश्चित ही सहायता मिलगी।

वर्तमान शिक्षा की स्थिति एवं समस्याएँ–

युनेस्को की एक ताजा रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया के 70ः वयस्क निरक्षर नौ देशों में रहते है जिनमे सर्वाधिक लगभग 25 प्रतिशत भारत में हैं। निरक्षर लोगों की संख्या के लिए आँकड़ों में ज्यादा जाने की जरुरत नहीं है, करोड़ों बच्चे सरकार के अधिकतम प्रयासों के बावजूद भी शिक्षा ग्रहण करन से वंचित हैं। इस समय भारत की लगभग आधी जनसंख्या 25 वर्श से कम उम्र की है। इनमे से 12 करोड़ लोग 18 से

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No.337-342

23 वर्श के बीच के है, अगर इन्हे ज्ञान और हुनर से परिपूर्ण कर दिया जाए तो ये अपने बूते पर भारत को एक वैश्विक 'ाक्ति बना सकते है।
तीव्रगति से बढते वैश्वीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण, स्तरीकरण एवं बाजारवाद जैसी अनेक चुनौतियों को सामने ला खड़ा किया है। आज के समय में शिक्षा एक व्यापार की भाँति उपयोग में की जाने लगी है। आज के युग में शिक्षा का उददे्श्य राश्ट्रनिर्माण व व्यक्तित्व निर्माण के बजाय अधिक से अधिक लाभ कमाना होता हैं।

आज की शिक्षा बच्चों को नैतिकता, धर्म, सामाजिक मूल्यों के प्रति आदर आदि के बजाय अधिक से अधिक वेतन कमाने योग्य बनाने पर झुकाव देती है। आज शिक्षा का मुख्य उददे्श्य नैतिक गुणों का विकास करना न होकर उच्च स्तर का वेतन प्राप्त करना होता है । आज उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी दाखिला इसलिए लेते है ताकि उनका सालभर में अनेक बहुराश्ट्रीय कंपनियों, विभिन्न नामी–गिरामी इंजीनियरिंग महाविद्यालय, प्रबंधकीय संस्थानों में केम्पस सिलेक्शन करवाया जाता है जिनका सालाना पेकेज लाखों की राशि में होता है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया किसी वस्तु के व्यापारी की भाँति होती है। आज शिक्षा का मुख्य उददे्श्य नैतिक गुणों का विकास न होकर उच्च स्तर का वेतन कराना होना जा रहा है।

वर्तमान में बढ़ते वैश्वीकरण ने शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण, बाजारवाद जैसी अनेक चुनातियों को सामने ला खड़ा किया है। आज शिक्षा को एक उत्पाद की दृश्टि से देखा जाता है। सरकारी क्षेत्र की असफलता और निजी क्षेत्र की महत्वाकांक्षा के कारण शिक्षा का एक सीमा से अधिक व्यावसायीकरण हो गया है। उच्च और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना अब एक अत्यधिक खर्चीला स्वप्न हो गया है। निम्न और मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए इसे अर्जित करना बढ़ा दुश्कर कार्य हो गया है। पालक अपनी जिन्दगी भर की पूरी कमाई लगाकर भी अपने बच्चों को सहजता और सुलभता से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध नहीं करवा पा रहे हैं।

उच्च शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों का बेहतर शिक्षा एवं प्लेसमेंट की गारंटी देने का प्रलोभन देकर अपनी ओर आकर्शित करते है। अनुसंधान और आविश्कार से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। आज विद्यार्थी उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए एक उपभोक्ता की तरह हो गया है। एक ओर तो शिक्षण संस्थानों का बढ़ता व्यावसायिक दृश्टिकोण तथा दूसरी ओर पूंजी और भाई–भतीजावाद के कारण काबिल व्यक्तियों के बजाय अकौशल व्यक्ति उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश पा रहे है जिससे शिक्षा के स्तर में गिरावट आयी है।

भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए गुणवत्ता एक बड़ा मुद्दा है, इसका सबूत है कि विश्वस्तरीय मानकों पर हमारा एक भी शिक्षण संस्थान खरा नहीं उतरा है। 'टाइम्स हायर एज्युकेशन' मैंगजीन के एक सर्वे में बताया गया है कि विश्व के 200 श्रेश्ठ विश्वविद्यालयों की सालाना सूची में भारत की एक भी यूनिवर्सिटी को जगह नहीं मिल पायी है। आई. आई. टी. मुंबई सूची में 'ाामिल है लेकिन वह भी श्रेश्ठ 200 में स्थान नहीं बना पाया है।

यह समय की माँग है कि हम ऐसे गैर–सरकारी संस्थानों को निवेश का अवसर प्रदान करें जो कि शिक्षा क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाले संस्थानों का निर्माण करने में सक्षम हों तथा साथ ही उसमें अभिनव प्रयोंगो के द्वारा वैश्विक मानकों के साथ नये आयाम स्थापित कर सकें। राश्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिशद का

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No.337-342

'ाोध बताता है कि भारत के 90 प्रतिशत महाविद्यालयों एव 70 प्रतिशत विश्वविद्यालयों का स्तर बहुत ही कमजोर है जो कि भारतीय शिक्षा क्षेत्र में माँग और आपूर्ति में भारी अंतर का प्रमुख कारण है।

वस्तुतः भारतीय उच्च शिक्षा उददे्श्यविहीन है। इस प्रकार की शिक्षा विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन के लिए तैयार नहीं करती। उच्च शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान देने के कारण बी.ए., एम. ए. पास करने के उपरांत भी बहुत बड़ी संख्या में विद्यार्थी बेकार रहते है, इस कारण उच्च शिक्षा कौशल परख होना चाहिये ताकि छात्र स्वावलंबी एवं सचरित्र बन सके। इसके लिए भारतीय शिक्षण पद्यति में सुधार की आवश्यकता है।

शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु सझाव/उपाय–

कुछ अध्धयनों से यह बात उजागर हुई है कि सेकेंड्री स्कूल में अच्छे अंक लाने के दबाव से छात्रों में आत्महत्या करने की प्रवृति बहुत तेजी से बढ़ रही है। अतः ज्ञान की विभिन्न 'ााखाओं में सामंजस्य एवं अंतर्संबंध होना परम आवश्यक है। इस हेतु विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में विज्ञान तथा कला के साथ सामान्य शिक्षा की व्यवस्था भी की जानी चाहिये।

ऐसे युग में जहाँ विज्ञान और अंतर्राश्ट्रीय सहचर्य ने अभूतपूर्व प्रगति की है, यह आवश्यक है कि नागरिकों को ऐसी प्रेरणा दी जाए कि वे नित नई प्रौद्योगिकी तथा आधुनिकता के रचनात्मक प्रभावों को ग्रहण करें। साथ ही अपने प्राचीन आदर्शों तथा संस्कृति के उदात्त तत्वों से मुँह न मोड़े।

शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु निम्नांकित उपाय अपनाने जा सकते हैं–

1. उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुभवी प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा विद्यार्थियों का पथ प्रदर्शन करने एवं परामर्श देने की व्यवस्था करना आवश्यक है जिससे विद्यार्थी शिक्षा समाप्ति के उपरांत अपनी अभिरुचि एवं क्षमता के अनुसार कोई न कोई व्यवसाय ग्रहण कर सके।
2. किसी भी देश के विकास या व्यक्ति के विकास के लिए यह आवश्यक होता है; उसकी शिक्षा का माध्यम उनके अपने देश की भाशा बने जिसे वह आसानी से समझ सके। इसलिए यह जरुरी है कि उच्च शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाशा या संघिय भाशा हिन्दी को बनाया जाये।
3. उच्च शिक्षा संस्थानों में ऐसा पाठ्यक्रम तैयार नहीं करना चाहिए जो जातीय, जनजातीय विरोधी हो। जिससे छुआछुत की भावना या जातिगत भेदभाव उत्पन्न हो।
4. शिक्षा की प्रगति के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा 'ाोध कार्यों का विकास किया जाना चाहिए। अतः 'ाोध कार्य को प्रत्येक विश्वविद्यालय द्वारा प्रोत्साहित करना चाहिए।
5. अनेक बार कहा गया है कि विश्वविद्यालयीन शिक्षा विद्याार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान नहीं करती है। सामान्यतः विद्यार्थियां में 'ारीरिक श्रम एवं ग्रामीण जीवन के प्रति अरुचि रहती है। इस समस्या के समाधान के लिए वांछनीय एवं उपयुक्त उद्देश्य निर्धारित कर विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने की योजनाएँ बनाना एवं लागू करना चाहिए। उच्च शिक्षा का पाठ्यक्रम व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर निर्मित किया जाये। कार्य–अनुभव, व्यावसायिक बिशयों एवं कृशि विज्ञान तथा प्रोद्योगिकी शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिये जिससे पाठ्यक्रम रुचि के अनुरुप बने।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No.337-342

6 समय – समय पर विचार गोश्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिये एवं उसमे विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने की कोशिश करना चाहिये ।

7 विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय एवं प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिये। श्रेश्ठ साहित्य श्रेश्ठतम भावनाओं को जागृत करता है तथा उच्चतम आदर्श व आकांक्षाओं को बढ़ावा देता है अतः श्रेश्ठ पुस्तकों का अध्धयन–अध्यापन यथा रामायण, महाभारत, उपनिशद आदि विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में 'ाामिल करना चाहिये ।

8 उच्च शिक्षा संस्थानों और कंपनियों को एक कदम आगे ले जाने के लिए एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना चाहिए। हमें कॉर्पोरेट, वरिश्ठ शिक्षाविदों, प्रशासकों और छात्रों से मिलकर एक समर्पित सेल की प्रभावी ढंग से स्थापना करने के साथ अपने पूर्व छात्रों के नेटवर्क का उपयोग संबंधों को मजबूत और कंपनियों के साथ खुला संचार का वातावरण निर्मित करने की जरूरत है। वे लगातार पाठ्यक्रम, शिक्षा शास्त्र, पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण आदि पर कॉरपोरेट्स से सुझाव तलाशते हुए और उन्हें लागू करने के लिए नियामकों के साथ मिलकर कार्य करें जिससे देश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर रहे।

9 हाल ही में निजी संगठनों में आरक्षण, जाट आंदोलन, गुर्जर आंदोलन, पटेल आंदोलन और अन्य क्षेत्रीय तथा सामाजिक मुद्दों के कारण भी देश की छवि में बहुत बुरी तरह से नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। जातिगत आरक्षण के भी अपने गुण और दोश हैं। निश्चित रूप से देश के विकास की दिशा में सकारात्मक प्रभावों के लिए इनका शीघ्र उचित समाधान आवश्यक है।

10 निरंतर विकास ही गरीबी और शिक्षा की कमी सहित हमारी विभिन्न समस्याओं का हल है।

निश्कर्श :–

इस प्रकार उपर्युक्त सुझावों पर ध्यान देकर इन्हे अमल में लाकर शिक्षा के स्तर में सुधार की संभावना हो सकती हैं। किंतु शिक्षा को केवल भौतिक उत्पादन–वितरण का साधन न बनाकर नैतिक मूल्यों से अनुप्रमाणित कर आत्मसंयम, इंद्रियनिग्रह प्रलोभनोंपेक्षा, तथा नैतिक मूल्यों का केन्द्र बनाया जाय। ऐसी शिक्षा कामधेनु बनकर सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाली और सुख–समृद्धि तथा 'ाांति का संचार करने वाली होगी।

भारत जैसे वृहद् और विभिन्नता से भरपूर देश में गैर–सरकारी प्रयासों की आवश्यकता को नजरअंदाज करना मुश्किल है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तेजी से होती हुई प्रगति के साथ तालमेल बिठाते हुए निरंतर आवश्यक पाठ्यक्रम और अनुसंधान कार्यक्रमों के उन्नयन के साथ–साथ बुनियादी सुविधाओं के विस्तार को प्राथमिकता देने की जरुरत ह।

गांधीजी कहा करत थे कि धर्म के बिना राजनीति मौत का फंदा है तथा हमारा बाह्य जीवन हमारे आंतरिक जीवन का प्रतिबिम्ब होना चाहिये। उनकी इस सीख को हम राजनीति की आपाधापी में भूल गये और आज उसका दुखद परिणाम हमारे सामने है। इस दुखद स्थिति से छुटकारा हमें राश्ट्रीय चरित्र निर्माण से मिल सकता है। राश्ट्रीय चरित्र के निर्माण में व्यक्ति और शिक्षा व्यवस्था दोनो की अपनी –अपनी भूमिका है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No.337-342

आज के भौतिकवादी युग में भी मूल्य शिक्षा चरित्र निर्माण के लिये आवश्यक है और इस पर जोर देने की आवश्यकता है।

शिक्षा रूपी बगिया को महकाने के लिये जीवन मल्य रूपी फूलों को सजाना ही होगा। शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन से एक सुदृढ़, सभ्य और स्वस्थ समाज की रचना हो, इस हेतु मूल्य –शिक्षा रूपी दीप को जलाना होगा।

चलों जलाएँ दीप वहाँ, जहाँ अभी भी अंधेरा है।
/शिक्षा पाकर भिक्षा मांगे, युवजन खाएं ठोकर आज।
आजादी का स्वप्न दिखाकर, पाखंडी करते है राज।
भ्रश्ट व्यवस्था ने भी डाला, अब यहाँ डेरा है।
चलो जलाएँ दीप वहाँ, जहाँ अभी भी अंधेरा है।

संदर्भ सूची :–

1 भूतपूर्व राश्ट्रपति 'श्री शंकरदयाल शर्मा' का प्रकाशित साहित्य 'शिक्षा के आयाम'
2 डॉ जे. डी. सिंह और अन्य शिक्षाविदों द्वारा लिखित लेख